Notes

शैक्षिक गतिविधियाँ Educational Educational Activities

शैक्षिक गतिविधियों की आवश्यकता वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था की प्रमुख आवश्यकता है। किसी भी क्लास को क्रियाशील रहने के लिए पाठ्यक्रम के विकास का निर्धारण किया जा सकता है

शिक्षण अधिगम समाग्री - शिक्षण अधिगम समाग्री को शैक्षिक व्यवस्था का प्रमुख अंग माना गया है। आज किसी भी शिक्षण विषय के पाठ्यक्रम को उस समय तक पूर्ण नही माना जा सकता है। जब तक उसे शिक्षण अधिगम समाग्री का समावेश न हो।

1- सामाजिक - राजनैतिक, भौगोलिक आर्थिक विविधताएँ Social, Political, Geographical Economics Diversity.

विद्यालयी शिक्षा में ज्ञान के वर्गों का ज्ञान की विविध संरचनाओं के विविध संकल्पों चयन करना एक जटिल प्रक्रिया है। क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग को सन्तुलन करना एक असम्भव कार्य है।

Scanned with CamScanner

Notes

विद्यालयी शिक्षा के सामाजिक आधार :-

सम्पूर्ण विद्यालयी शिक्षा का स्वरूप सामाजिक अपेक्षाओं एवं अभिभावक वर्ग की आकांक्षाओं पर निर्भर है। अभिभावक बालक को विद्यालय इस लिए भेजता है। उस बालक के उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप विकास कर सके। शिक्षा व्यवस्था का दायित्व समाज की आकांक्षाओं की पूर्ति करना समाज को एक नवीन दिशा प्रदान करना ही है।

1- विद्यालयी शिक्षा ज्ञान एक वर्ग करते समय सार्वजनिक हित की भावना को ध्यान में रखना चाहिए।

2. विद्यालयी शिक्षा का प्रमुख पक्ष सामाजिक सुधार होना चाहिए। पाठ्य के इस प्रकार के तथ्यों का समावेश किया जाय सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करने की प्रेरणा प्रदान करते है। इसके साथ-साथ समाज के स्वरूप को आदर्श बनाने की प्रक्रिया है।

3- विद्यालयी शिक्षा में उन वर्गो का या विषयों का समावेश किया जाना चाहिए। जिसमें छात्रों के सामाजिक गुण, प्रेम, सहयोग एवं समर्पण की भावना की योग्यता विकसित हो सके।

4- विद्यालयी शिक्षा में उन तत्यो का समावेश होना चाहिए जिसमें सामाजिक न्याय की उपलब्धता प्रत्येक व्यक्ति को हो सके।

Scanned with CamScanner

Notes

5- सामाजिक सद्भावना का विकास वर्तमान समय सामाजिक दशा को देखते हुए अनिवार्य है।

2- विद्यालयी शिक्षा के राजनीतिक आधार :- विद्यालयी शिक्षा के राजनीतिक आधार सम्बन्धित तथ्यों को शामिल करने के लिए मूल तर्कों को प्रस्तुत किया गया है।

1:- विद्यालयी शिक्षा के प्रशासनिक नियमों के बारे में ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए इसमें छात्रों के विभिन्न प्रकार के प्रशासनिक नियमों का पालन करने का आदेश विकसित होता है।

2:- छात्रों के स्वानुशासन की भावना विकसित करने के लिए स्थानीय प्रशासन का ज्ञान भी छात्रों को प्रदान करना चाहिए स्थानीय प्रशासन के नियमों एवं परम्पराओं का पालन करने से विद्यालयी नियमों की योग्यता विकसित होती है।

3- विद्यालयी शिक्षा में छात्रों को राजनीतिक अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान प्रदान तथा समझना चाहिए की व्यक्ति कर्तव्य का पालन करता है।

4 विद्यालयी शिक्षा में छात्रों के राजनैतिक धर्म एवं राजनैतिक व्यवस्थाओं के बारे में बताना चाहिए।

5 विद्यालयी शिक्षा में छात्रों को राजनैतिक तथ्यों को समाहित करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Notes

विद्यालयी शिक्षा के सांस्कृतिक आधार :- विद्यालयी शिक्षा का स्वरूप सामाजिक, सांस्कृतिक आधार पर निश्चित होता है। जब विद्यालयी शिक्षा अपने संस्कृति और सभ्यता से अलग होता है। तब विद्यालय, विद्यार्थी, एवं शिक्षक तीनों का स्वरूप विकृत हो जाता है।

1- विद्यालय में सांस्कृतिक मूल्यों को आधार मान कर विषय वस्तु का समावेश होना चाहिए
जैसे - दूसरों को सम्मान प्रदान करना, दूसरों की सहायता करना, दूसरों के हित के बारे में विचार प्रकट करना, स्वंम का समर्पण करना आदि।

2- विद्यालयी शिक्षा सांस्कृतिक मूल्यों के साथ-2 सांस्कृतिक विश्वासों का समावेश होना चाहिए। जिसमें सांस्कृतिक विश्वास तथा मानव जीवन का सर्वांगीण विकास हो सके।

3- विद्यालयी शिक्षा उन सांस्कृतिक परम्पराओं को सम्मिलित करना चाहिए स्वस्थ एवं समायोपयोगी है।
जैसे- दूसरे के स्त्री को माता, पिता का सम्मान समझना, दूसरे के धन को मिट्टी के समान समझना, अपने द्वारा किसी भी व्यक्ति मन, वचन, कर्म, से कष्ट न पहुचाना,

Scanned with CamScanner

Notes

4- विद्यालयी शिक्षा के उत्सवों का आयोजन धूम धाम से आयोजित किया जाना चाहिए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन जैसे 15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर आदि।

4. विद्यालयी शिक्षा में वैज्ञानिक आधार:- विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में वैज्ञानिकता का समावेश आवश्यक रूप से होना है।

1. प्राथमिक स्तर के छात्रों को परिवेशीय तत्वों के रूप में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।
जैसे- वातावरण में धुआँ उड़ने से बच्चों के मन में अनेक प्रकार के भावनायें उत्पन्न होती हैं।

2. शिक्षा व्यवस्था में छात्रों को प्रायोगिक में अधिक अवसर प्रदान करके सीखने देना चाहिए।

3. पाठ्यक्रम की छोटी - छोटी समस्याओं छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करनी चाहिए जिससे छात्र में चिंतन एवं तर्क की प्रवृत्ति जागृत हो सके।

Scanned with CamScanner